रामचरित मानस में प्रकृति चित्रण

प्रो0 माधुरी कुमारी

तुलसीदास प्रकृति जगत के कोरे दर्शक या तमशवीन नहीं थे। उन्होने प्रकृति की सम्पूर्णता का साक्षात्कार किया था। प्रकृति के रौद्र तथा भयंकर रूप की झलक भी हमें मानव कार्य कलापों की सादृश्य योजना के क्षेत्र में गोस्वामी तुलसीदास के काव्य में अपनी सम्पूर्ण प्रभविष्णुता के साथ देखने को मिलती है। कैकेयी की कोपमुद्रा के समय रूपक का तो ऋषि ने निर्वाह किया ही है, प्रकृति के भयंकर रूप को उद्घाटित करने में भी पूर्णतः समर्थ हुआ है।

रामचरित मानस में प्रकृति का विभिन्न रूपों में चित्रण मिलता है। प्रकृति के आलम्बन रूप, उद्दीपन रूप, अलंकार रूप एवं उपदेश युक्त प्रकृति चित्रण की विशेष प्रधानता है। इसमें भी खास कर उपदेश परक रूप की विशेष प्रधानता है। उपदेश बहुल चित्रण को देखकर प्रायः लोग कहते हैं कि प्रकृति का चित्रण गौण हो गया है और उपदेश ही प्रधान हो गया है।